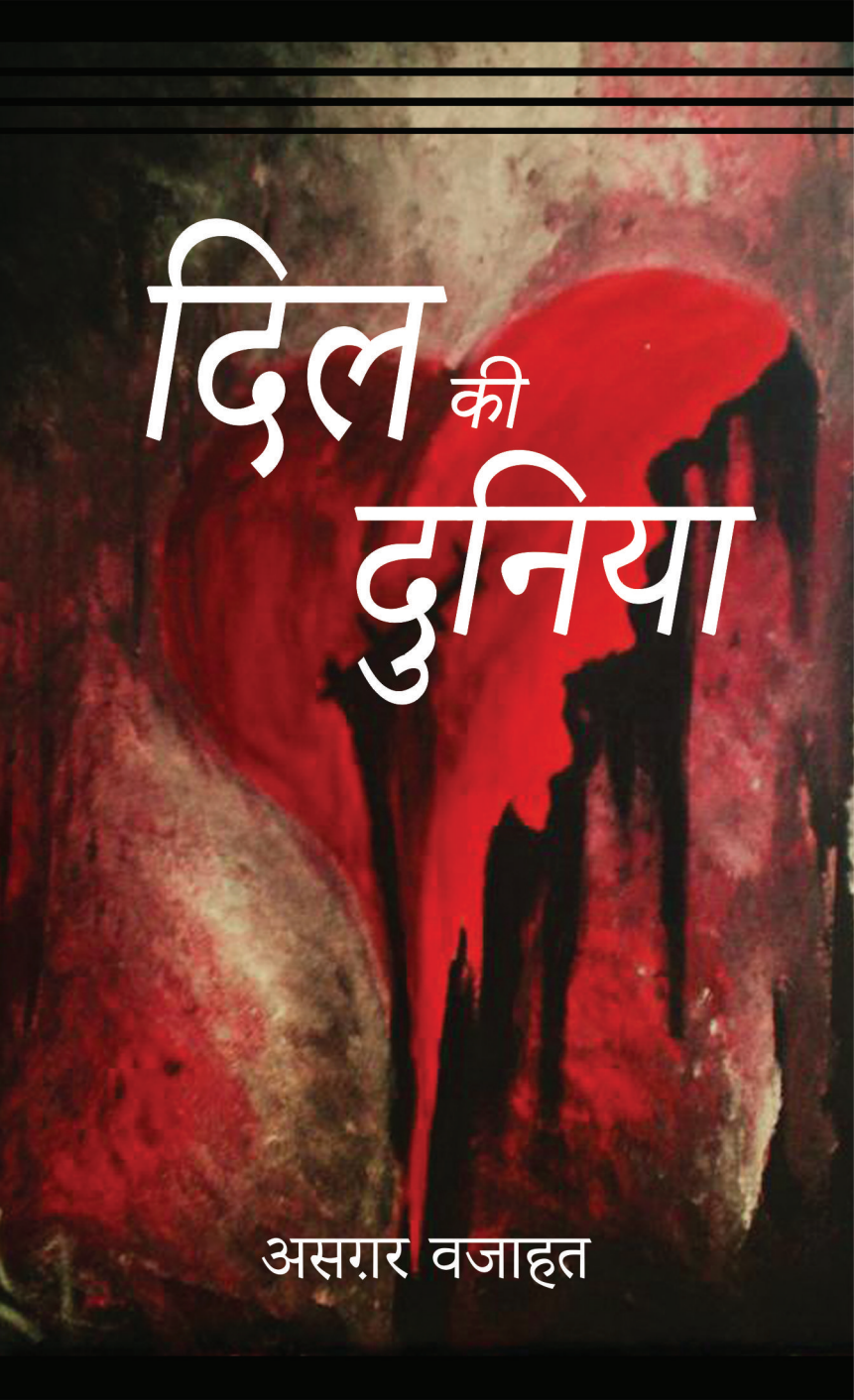
दिल की दुनिया
असग़र वजाहत

दिल की दुनिया

मुझे यह अंदाजा बिल्कुल नहीं था कि मैं बुढ़ापे में इतनी जल्दी 'खिसक' जाऊंगा। मैं तो ये सोचे बैठा था कि दांतों के दर्द और आंखों की कमजोरी से होता बुढ़ापा सबसे बाद में 'भेजे' तक पहुंचेगा, लेकिन हुआ इसका उल्टा। यह भी गजब है कि मैं अपने को भला-चंगा समझता हूं, लेकिन मुझे यह समझाया जाता है या ज्यादातर लोग मानते हैं कि मैं खिसक गया हूं।

कभी-कभी बुढ़ापे में पता नहीं क्यों, चीजें गड़बड़ाने लगती हैं। कहा जाता है कि बूढ़े शक्की होते हैं। यह सच है। कहा जाता है कि बूढ़े चटोरे होते हैं। यह भी सच है। कहा जाता है कि बूढ़ों की काम-वासना उनकी आखों और जबान में आ जाती है। यह भी सच है। लेकिन बुढ़ापे में मेरे साथ जो हुआ, वह आम-तौर पर होता है या नहीं, मुझे नहीं मालूम।

लोग कहते हैं कि बुढ़ापे में बहुत अजीब तरह से खिसका हूं। इसका सुबूत यह दिया जाता है कि मैं अखबार को उल्टा पढ़ने लगा हूं। उल्टा पढ़ने से मतलब यह नहीं कि पिछला पन्ना पहले और पहले का पन्ना आखिर में पढ़ता हूं। उल्टा पढ़ने का यह मतलब भी नहीं कि किसी घटना या सूचना आदि को उल्टा कर देता हूं। उदाहरण के लिए, अगर खबर है कि सरकार ने अकाल पीड़ित जनता को सौ-करोड़ रुपए की सहायता देने का निश्चय किया है, तो मैं इस खबर को उल्टा कर देता हूं। पढ़ता हूं कि अकाल पीड़ित क्षेत्र की जनता ने सरकार को सौ करोड़ रुपए की सहायता देने का निश्चय किया है। यह उल्टा-पुल्टा समझने और कहने की आदत शायद पुरानी है। बस, इतना हुआ है कि बुढ़ापे में थोड़ी बढ़ गई है। मैं पेशे के तौर पर अध्यापक हुआ करता था। छात्रों को जब भी पढ़ाता था, यह लगता था कि छात्र मुझे पढ़ा रहे हैं। और धीरे-धीरे छात्रों से मेरा अच्छा रिश्ता स्थपित हो गया था, क्योंकि मैं पास छात्रों को फेल और फेल छात्रों को पास मानने लगा था। मैं बुद्धिमान को मूर्ख और मूर्ख को बुद्धिमान कहता था। छात्र मेरी बातों के मर्म को समझते थे, लेकिन प्रधानाचार्य मुझसे बहुत नाराज रहता था। क्योंकि मैं उसे चपरासी और चपरासी को प्रधानाचार्य कहा करता था। एक बार स्कूल में एक नेता आए थे। मैंने नेता को जनता और जनता को नेता बोल दिया था। इस पर नेता ने मेरा तबादला एक दुर्गम स्थान के स्कूल में करा दिया था। पर यह सब मेरे लिए सरल था।

इसी दौरान मैंने सुबह का अखबार चौराहे पर जाकर पढ़ना शुरू कर दिया था। मैं खबरें पढ़ता था—'प्रधानमंत्री ने ग्लानि के साथ कहा कि देश बहुत तेजी से पीछे जा रहा है।' मेरी ये खबरें सुनकर लोग प्रसन्न हुआ करते थे। वे मुझसे तरह-तरह की खबरें पढ़वाते थे और देखना चाहते थे कि असली खबरों को अखबार वाले कैसे तोड़-मरोड़कर छापते हैं। किसी ने मुझे यह सलाह भी दी थी मैं अपना अखबार शुरू कर लूं। लेकिन मेरे पास खबरें नहीं थीं। मैं तो अखबारों की उल्टी खबरों से ही सीधी खबरें बनाता था।

एक दिन मैंने चौराहे पर खबर पढ़ी की रक्षा मंत्री ने देश से कहा कि देश पूरी तरह असुरक्षित है और विदेश से किसी प्रकार का कोई खतरा है। इस खबर के बाद मैंने दूसरी खबर पढ़ी कि प्रधानमंत्री ने संसद में कहा कि हम पड़ोसी देशों से अपनी सभी समस्याओं को लड़ाई-झगड़े द्वारा हल करना चाहते हैं। तीसरी खबर थी कि देश की आर्थिक स्थिति